11

अनन्त पुरस्कार और दण्ड

हमारे मनों के समझने के लिए सबसे कठिन अवधारणाओं में से एक ''अनन्तकाल'' अर्थात कभी न खत्म होने वाला अस्तित्व है। हमारे भौतिक संसार की हर वस्तु, जिसे हम देख और छू सकते हैं, का आरम्भ हुआ था और अन्त भी होगा; इसलिए अनन्तकाल की अवधारणा को समझाना हमारी समझ से बाहर है। अनन्तकाल हमारे अनुभव से बाहर है, जिस कारण इसे समझना हमारे दिमाग के लिए लगभग असम्भव है।

हम चकित होकर परमेश्वर द्वारा हमें स्वर्ग देने की बात को तो मान सकते हैं, चाहे हमें इस बात का अहसास है कि जो कुछ हमने इस छोटे से जीवन में किया उससे अनन्तकाल के लिए वहां रहने का अधिकार नहीं पाया जा सकता। इसके साथ ही, हम नरक के आतंक से यह सोचकर कि इस छोटे से जीवन में हमने जो कुछ किया, उससे हम कभी न खत्म होने वाले दण्ड के योग्य नहीं हैं, आपत्ति कर सकते हैं। हमें लग सकता है कि धर्मी लोग परमेश्वर के अनुग्रह और करुणा के अधर्मियों को उसके बदला देने से अधिक अधिकारी हैं।

मनुष्य के विचार

इस बारे में मनुष्य की दिलचस्पी तथा समझ की कमी के कारण मृत्यु के बाद दण्ड के चार प्रमुख विचार बने हैं।

पहला, सर्वमुक्तिवादियों का विचार यह है कि प्रेम तथा करुणा का परमेश्वर होने के कारण, परमेश्वर अन्ततः सब लोगों को स्वर्ग में अनन्त जीवन का पुरस्कार देगा, चाहे पृथ्वी पर उनका जीवन कैसा भी क्यों न रहा हो। कुछ लोगों का विचार है कि किसी प्रकार का दण्ड नहीं दिया जाएगा, जबकि दूसरों का मत है कि कुछ न कुछ दण्ड तो अवश्य मिलेगा। इन सभी विभिन्नताओं के बावजूद, सभी सर्वमुक्तिवादी इस बात को मानते हैं कि हर कोई अन्त में स्वर्ग में ही जाएगा।

दूसरा, अस्तित्व मिट जाने में विश्वास रखने वालों का विचार है कि अन्तिम न्याय के बाद दुष्ट लोगों का अस्तित्व ही नहीं रहेगा। (1) कुछ लोगों का विचार है कि दुष्ट मृतक कभी जिलाए नहीं जाएंगे और जो जीवित दुष्ट हैं, वे नष्ट हो जाएंगे। (2) कुछ का विचार है कि सब लोगों के जी उठने के बाद, सभी दुष्ट चाहे वे जीवित हों या मृत, नष्ट हो जाएंगे।

(3) दूसरों का विचार है कि सभी दुष्ट मृतकों को जिलाया जाएगा और उन्हें सच्चाई को जानने का अवसर दिया जाएगा। फिर उनमें से और जीवित लोगों में से जो सच्चाई का इनकार करते हैं नष्ट किए जाएंगे। (4) ऐसे भी हैं जो यह मानते हैं कि केवल दुष्ट मृतकों को ही, जिन्हें सच्चाई को जानने का अवसर नहीं मिला था, जिलाया जाएगा और उन्हें अवसर दिया जाएगा। यदि वे सच्चाई को ठुकराते हैं, तो वे भी उन्हीं के साथ जिन्होंने सच्चाई को ग्रहण नहीं किया, नष्ट किए जाएंगे।

तीसरा, बहुत से लोगों का विश्वास सच्चाई का इनकार करने वालों के लिए कभी न खत्म होने वाला दण्ड है। कुछ लोगों का विचार है कि भौतिक आग दुष्ट लोगों को सदा के लिए सताएगी, जबकि दूसरों का विचार है कि आग को दुष्टों को मिलने वाली पीड़ा को दर्शाने के लिए इस्तेलाल किया गया है। कुछ यह मानते हैं कि दण्ड की मात्रा किसी के पापों की गम्भीरता के आधार पर तय होगी, जिसमें उन लोगों के साथ रियायत बरती जाएगी, जिन्हें सच्चाई को जानने का अवसर नहीं मिला।

चौथा, कुछ का मानना है कि जो लोग अनुग्रह की स्थिति में मर गए हैं, परन्तु उन्हें अपने पापों का पर्याप्त दण्ड नहीं मिला, उन्हें इस स्थान से जाने और स्वर्ग में जाने से पहले उनके पापों के दण्ड के रूप में परगेटरी में कष्ट झेलना पड़ेगा। परगेटरी के इस समय को पृथ्वी पर बिताए गए किसी के जीवन के आधार पर और यह कि मास, प्रार्थना, शुभकर्मों तथा उनकी ओर से दूसरों द्वारा सहे गए कष्टों से उन्हें मिली सहायता पर निर्भर है।

कुछ यह निष्कर्ष निकालते हैं कि सदा काल के दण्ड को परमेश्वर के प्रेम, अनुग्रह तथा कृपा से नहीं मिलाया जा सकता। इसलिए वे बाइबल की व्याख्या ऐसे करने की कोशिश करते हैं, जो उस परमेश्वर के साथ मेल खाती हो, जो केवल प्रेम करने वाला, दयालु और सहनशील है (1 तीमुथियुस 1:2; 1 यूहन्ना 4:8)। वे परमेश्वर के दूसरे पहलुओं को नज़रअन्दाज़ कर देते हैं कि वह क्रोध करने वाला तथा बदला लेने वाला परमेश्वर भी है (रोमियों 1:18; 2:8; 3:5; 12:19; इफिसियों 5:6; कुलुस्सियों 3:6; 2 थिस्सलुनीकियों 1:8)। वह अधर्म से बैर (इब्रानियों 1:9) रखता, ''कड़ाई'' दिखाता (रोमियों 11:22) और ''भस्म करने वाली आग'' (इब्रानियों 12:29) है। हम पढ़ते हैं, ''इसलिए परमेश्वर की कृपा और कड़ाई को देख जो मारे गए उस पर कड़ाई, परन्तु तुझ पर कृपा, यदि तू उसमें बना रहे, नहीं तो, तू भी काट डाला जाएगा'' (रोमियों 11:22)। इब्रानियों 10:31 कहता है, ''जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।''

परमेश्वर दयालु होने के साथ-साथ कठोर भी है। वह उन लोगों के साथ दयालुता से पेश आता है, जो उसकी आज्ञा मानते हैं, परन्तु उन्हें कड़ाई से दण्ड देता है, जो उसकी इच्छा के विरुद्ध चलते हैं (व्यवस्थाविवरण 5:9, 10)। उसकी दयालुता और कड़ाई पुराने और नये दोनों नियमों में दिखाई देती है। उदाहरण के लिए, दाऊद के प्रति उसकी दयालुता दिखाए जाने के रूप में, परमेश्वर के अनुग्रह का पता चलता है। व्यवस्था के अनुसार, बतशेबा के साथ पाप और ऊरिय्याह की हत्या के लिए उसका दण्ड मृत्यु (लैव्यव्यवस्था 20:10; गिनती 35:30) होना चाहिए था। परन्तु परमेश्वर ने उस पर दया दिखाई और

उसका पाप क्षमा कर दिया, क्योंकि वह परमेश्वर से प्रेम करता था और परमेश्वर उससे प्रेम करता था (2 शमूएल 12:13)। परमेश्वर ने दूसरे लोगों को, जिन्होंने उसके विरुद्ध बगावत की, दण्ड दिया जैसे नूह के समय का दुष्ट संसार क्षमा नहीं किया गया (2 पतरस 2:5)। परमेश्वर की कड़ाई को आग से नादाब और अबीहू की मृत्यु (लैव्यव्यवस्था 10:1-3) तथा पुराने नियम में वर्णित अन्य घटनाओं में देखा जा सकता है।

नये नियम में परमेश्वर की दयालुता पतरस (लूका 22:31, 32), पौलुस (1 तीमुथियुस 1:15, 16) और अन्यों के साथ किए गए उसके व्यवहार में दिखाई गई है। हनन्याह और सफ़ीरा (प्रेरितों 5:1-10) और हेरोदेस (प्रेरितों 12:20-23) की मृत्यु में उसका क्रोध दिखाया गया है। परमेश्वर ने इन लोगों को उनकी गलतियों के कारण मारा था।

आज्ञा न मानने वालों के साथ परमेश्वर का व्यवहार दिखाता है कि वह कड़ा दण्ड देने में सक्षम है। जो लोग परमेश्वर को प्रेम करने वाले परमेश्वर के रूप में ही देखते हैं, वे पाप के साथ उसकी गहरी नापसंदगी तथा उसकी इच्छा न मानने वालों के लिए उसके दण्ड को नज़रअन्दाज़ करते हैं।

परमेश्वर का विचार

क्या परमेश्वर धर्मी लोगों को अनन्तकाल के लिए पुरस्कार और अधर्मियों को दण्ड देगा? क्या "अनन्तकाल" केवल पुरस्कार की कुछ अवधि है न कि दण्ड की अवधि? (देखें मत्ती 25:46।) क्या अनन्तकाल तक मिलने वाला दण्ड केवल कलीसिया की परम्परा है, बाइबल की शिक्षा नहीं। हमारे लिए मनुष्य को मिलने वाले पुरस्कार या दण्ड की अवधि को जानने का सबसे बेहतर ढंग परमेश्वर के प्रकाशन में देखकर पता लगाना है कि उसने इसके बारे में क्या कहा है। जो कुछ परमेश्वर ने सिखाया है, वही सही है।

मूल भाषा के आधार पर, हम आसानी से बाइबल की शिक्षा के अनुसार पुरस्कार तथा दण्ड की अवधि तय कर सकते हैं। दोनों ही सदा काल के लिए बताई गई हैं।

आवश्यक नहीं कि इब्रानी शब्द *olam* का अर्थ "कभी खत्म न होने वाला" हो, परन्तु साधारणतया इसका अर्थ "बना रहने वाला," "युग तक बना रहने वाला," या "निरन्तर बने रहना" है।[1] अन्य वचनों के संदर्भों से पता लगाना आवश्यक है कि किसी बात के सीमित समय के लिए या अनन्तकाल तक रहने की बात कही गई है। पुराने नियम की केवल एक आयत, दानिय्येल 12:2 में *ओलम* शब्द का इस्तेमाल दण्ड और पुरस्कार के अर्थ में किया गया है: "और जो भूमि के नीचे सोए रहेंगे उन में से बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा के जीवन के लिए, कितने अपनी नामधराई और सदा तक अत्यंत घिनौने ठहरने के लिए।" इस आयत का अर्थ "युग को मापना" हो सकता है; परन्तु यदि नया नियम यह सिखाता है कि यह सदा के लिए होगा, तो फिर इस आयत की व्याख्या ऐसे ही की जानी चाहिए।

यूनानी शब्द *aion*[2] को *eis* पहले लगने के अलावा जिसका अर्थ "युग में" है, "युग" अर्थात समय के एक काल (मत्ती 28:20) के अर्थ में समझा जाना चाहिए। ऐसा होने पर, इसका अनुवाद "सदा के लिए" होना चाहिए (मत्ती 6:13; 21:19; लूका 1:33,

55)। दोहराने पर (*eis tous aionas tov aionas*; मूलत:, ''युगों के युगों में''), इसका अनुवाद ''युगानुयुग'' (फिलिप्पियों 4:20; 1 तीमुथियुस 1:17) होना चाहिए। *Aionios* शब्द हमेशा उसका संकेत देता है, जो सदा काल का या अनन्तकालिक है और इसका अनुवाद अधिकतर अनुवादों में यही हुआ है (मत्ती 18:8; 19:16, 29)।[3]

अगली आयतों में, *eis* से पहले लगने पर *aion* का अनुवाद ''सर्वदा'' जो मूलत: ''युग में'' है, हुआ है और इसका इस्तेमाल भविष्य के हमारे पुरस्कार या दण्ड के लिए हुआ है:

> ''यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा'' (यूहन्ना 6:51; देखें 6:58)।
>
> ''यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्त काल तक [सर्वदा] मृत्यु न देखेगा'' (यूहन्ना 8:51, 52)।
>
> ''वे कभी [सर्वदा] नष्ट न होंगे'' (यूहन्ना 10:28)।
>
> ''जो कोई जीवित है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक [सर्वदा] न मरेगा'' (यूहन्ना 11:26)।
>
> जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा (1 यूहन्ना 2:17)।
>
> जिनके लिए सदा काल तक अंधकार रखा गया है (यहूदा 13ख)। (2 पतरस 2:17 में आरम्भिक लेखों में *aion* नहीं मिलता जो यहूदा 13 का समानान्तर है।)

कई आयतों में, *eis* से पहले *aion* को दोहराया गया है, जिसके कारण उसका अनुवाद भविष्य में मिलने वाले पुरस्कार या दण्ड के अर्थ में ''युगानुयुग'' किया जाता है:

> और उनकी पीड़ा का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा, ... उन को रात-दिन चैन न मिलेगा (प्रकाशितवाक्य 14:11)।
>
> वे रात-दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे (प्रकाशितवाक्य 20:10)।
>
> वे युगानुयुग राज्य करेंगे (प्रकाशितवाक्य 22:5)।

इन आयतों में *aionios* का इस्तेमाल भविष्य के पुरस्कार या दण्ड के अर्थ में किया गया है और उसका अनुवाद ''अनन्तकाल'' या ''सर्वदा'' है:

> ''टुंडा या लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए इस से भला है कि दो हाथ या दो पांव रहते हुए तू अनन्त आग में डाला जाए'' (मत्ती 18:8)।

''और जिस किसी ने ... छोड़ दिया है, ... वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा'' (मत्ती 19:29; देखें मरकुस 10:30; लूका 18:30)।

''मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले, जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है'' (मत्ती 25:41)।

''और ये अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे'' (मत्ती 25:46)।

क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है (2 कुरिन्थियों 4:17)।

हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं, परन्तु चिरस्थाई है (2 कुरिन्थियों 5:1)।

वे प्रभु के साम्हने से और उसकी शक्ति के तेज़ से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)।

... कि वे भी उद्धार को जो मसीह यीशु में है, अनन्त महिमा के साथ पाएं (2 तीमुथियुस 2:10; देखें 1 पतरस 5:10)।

इस रीति से तुम हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने पाओगे (2 पतरस 1:11)।

हमें अन्तिम न्याय (इब्रानियों 6:2), ''अनन्त छुटकारा'' (इब्रानियों 9:12) और ''अनन्त मीरास'' (इब्रानियों 9:15) के बारे में भी पढ़ने को मिलता है।[4]

पहले आई आयतों को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि धर्मियों को मिलने वाला प्रतिफल भी अधर्मियों को मिलने वाले दण्ड जितने समय तक ही रहेगा। यदि धर्मियों को मिलने वाला पुरस्कार सदा के लिए है, तो दुष्टों को मिलने वाला दण्ड भी सदा के लिए ही होगा। जितनी पक्की परमेश्वर की यह प्रतिज्ञा है कि धर्मी लोग उसके साथ सदा तक स्वर्ग में रहेंगे, उतनी ही पक्की प्रतिज्ञा यह है कि अधर्मी लोग सदा के लिए दण्ड पाएंगे।

दुष्टों को वही दण्ड मिलेगा, जो शैतान और उसके दूतों को मिलने वाला है (मत्ती 25:41)। प्रकाशितवाक्य 20:10 कहता है कि शैतान और वह जन्तु, झूठा भविष्यवक्ता ''रात-दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे।'' यदि इस आयत में केवल यही होता कि पीड़ा युगानुयुग रहेगी, तो दण्ड के समय का संकेत देने के लिए वही काफ़ी थी; परन्तु ''रात-दिन'' (यद्यपि प्रकाशितवाक्य 22:5 के अनुसार रात-दिन होंगे ही नहीं) यह ज़ोर देने के लिए है कि दण्ड बिना रुके और अनन्तकाल तक मिलने वाला दण्ड होगा।

कुछ लोगों ने निष्कर्ष निकाला है कि क्योंकि यहूदा ने सदोम और अमोरा के विनाश को ''अनन्त आग'' के उदाहरण के रूप में दिया है (यहूदा 7) इसलिए ''अनन्त आग''

का अर्थ अस्तित्व मिट जाना है। उनका मानना है कि इस वाक्यांश को आग के समय के बजाय परिणामों पर लागू होना चाहिए। इस निष्कर्ष के साथ समस्या यह है कि सदोम और अमोरा के लोगों का विनाश (उत्पत्ति 19:27-29) अनन्तकालिक नहीं था। यीशु ने कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूं, न्याय के दिन उस नगर की दशा से सदोम और अमोरा के देश की दशा अधिक सहने योग्य होगी'' (मत्ती 10:15)। यदि सदोम और अमोरा के लोग न्याय के दिन यीशु के सामने प्रकट होंगे, तो ''अनन्त आग'' से उनका अस्तित्व मिटा नहीं, बल्कि केवल उनका विनाश हुआ। अगले पाठ में, हम दुष्टों को मिलने वाले दण्ड पर चर्चा करेंगे और इस बात का पता लगाएंगे कि ''विनाश'' का क्या अर्थ है। अनन्त आग, जिसने सदोम और अमोरा को नाश किया, के दो उदाहरण हैं: (1) यह दिखाती है कि परमेश्वर दुष्टों को दण्ड देगा और (2) यह परमेश्वर द्वारा दिए जाने वाले दण्ड की कड़ाई का संकेत है।[5]

सारांश

यह विचार कि परमेश्वर सदा के लिए दण्ड देगा और जिन्होंने उसकी आज्ञा नहीं मानी है, बड़ा ही भयभीत करने वाला है, परन्तु यह शिक्षा तो परमेश्वर के वचन में है। अधर्मियों को मिलने वाला दण्ड धर्मियों को मिलने वाली आशिषों की तरह ही सदा काल तक होगा। इस स्पष्टता से हमें हर काम परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए। यदि हम स्वर्ग में उसके साथ अनन्तकाल को प्राप्त कर लेते हैं और शैतान तथा उसके दूतों के साथ अनन्तकाल की आग से बचते हैं, तो हर प्रयास, हर कठिनाई, सेवा का हर पल उपयोगी होगा।

टिप्पणियां

[1]''आकाश और पृथ्वी का भविष्य'' पाठ में *ओलम* पर चर्चा देखें। [2]*Aion* का अनुवाद कुछ मामलों में ''संसार'' किया जाता है (मत्ती 12:32; 13:22), परन्तु और आधुनिक अनुवादों में ''युग'' है। [3]KJV में *aion* के लिए ''युग'' के बजाय ''संसार'' शब्द का इस्तेमाल किया गया है, जिससे *kosmos* के साथ उलझन पड़ सकती है, जिसका अर्थ ''संसार'' है। [4]अनन्त जीवन की चर्चा के लिए ''धर्मियों को मिलने वाला प्रतिफल'' पाठ देखें। [5]इस पाठ में ''अनन्त जीवन'' पर लघु चर्चा अजीब लग सकती है; परन्तु, इस अभिव्यक्ति का संख्या की तरह गुण भी उतना ही है। इसलिए यह चर्चा बाद के पाठ ''धर्मियों को मिलने वाला प्रतिफल'' तक के लिए छोड़ देते हैं।